आजादी के बाद तक 11 गांवों में उनकी जागीर रही

(यह विवरण प्रसिद्ध इतिहासकार गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा के उदयपुर राज्य का इतिहास पृष्ठ 336,574, 591 एवं 656 तथा वीर विनोद पृष्ठ 309, 352, 402 एवं 408 के आधार पर तैयार किया गया। जिनका मूल आधार कीर्ति स्तम्भ की प्रशस्ति श्लोक 188 से 193 चित्तौड़ के समिद्वेश्वर मंदिर की प्रशस्ति के अन्तिम श्लोक, घोसुण्डी की बावड़ी की प्रशस्ति श्लोक 25 एवं एकलिंगजी के मंदिर के दक्षिण द्वार की प्रशस्ति श्लोक 39-40-67 तथा 91-101 रहा हैं। इनका उल्लेख डॉ. गोपीनाथ शर्मा के 'राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत' नामक पुस्तक के पृष्ठ 133,147,154-156, 159,163-64 में भी हैं। इनके अलावा दशोरा जाति को मिले जागीर के गांव के ताम्रपत्र आदि भी इसके आधार हैं।)

मेवाड़ में आगमन- जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि मन्दसौर में हुए दशोरा (ब्राह्मण)जाति के कत्लेआम के बाद उनके सेनापति हालूजी हाड़ा ने जिन 15 दशोरा परिवारों (30व्यक्तियों) की रक्षा करके चित्तौड़ के महाराणा रावल रतनसिंह की शरण में भेजा था वे यहां आकर उनकी शरण मिल जाने से चित्तौड़ एवं उसके आसपास के गांवों में बस गये। ये परिवार यहीं से स्थानान्तरित होकर मेवाड़ के अन्य स्थानों में सुविधानुसार बसते गये। कुछ परिवार बाद में मध्य प्रदेश में देंतली एवं नावली गांवों से तथा कुछ गुजरात से आकर बसे। इस प्रकार मेवाड़ में वर्तमान में रह रहे समस्त दशोरा परिवारों का आगमन भिन्न-भिन्न समय में हुआ।

महाराणा रावल रतनसिंह का मेवाड़ में शासनकाल विक्रम संवत् 1358 (सन् 1301 ई.) से विक्रम संवत् 1360 (सन् 1303) तक दो ही वर्ष का था। रावल रतनसिंह के गद्दी पर बैठते ही दिल्ली का सुलतान अलाउद्दीन खिलजी चित्तौड़ पर विजय प्राप्त करने के लिए दिल्ली से विक्रम संवत् 1359 माघ सुधी 9 तारी 28 जनवरी सन् 1303 ई. को रवाना हुआ तथा विक्रम संवत् 1360 भाद्रपद सुदी 14 तारीख 26 अगस्त सन् 1303 ई. को चित्तौड़ का किला जीत लिया। यह अलाउद्दीन विक्रम संवत् 1353 (सन् 1296 ई.) में गद्दी पर बैठा था। इस युद्ध में रावल रतनसिंह मारा गया था। इस प्रकार ये दशोरा परिवार संभवतः चित्तौड़ में विक्रम संवत् 1358 (सन् 1301 ई.) के आसपास आये हों।

जागीरे एवं सम्मान- चित्तौड़ में जो दशोरा परिवार मन्दसौर से आये थे उनमें कई उद्भट्ट विद्वान, कवि, न्यायनिपुण, वेद-विद्या एवं दर्शन शास्त्र के ज्ञाता तथा वैद्यक में निपुण थे। इनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर मेवाड़ के महाराजाओं ने इन्हें समय-समय पर जागीरें, द्रव्य, वस्त्र, भूमि आदि देकर इन्हें सम्मानित किया। विद्वत्ता की यह परम्परा कई पीढ़ियों तक चलती रही जो इस जाति के लिए गौरव की बात है। मेवाड़ में जो दशोरा परिवार आये थे उनमें विद्वान पंडित झोटिंग भट्ट तथा उनके पौत्र महेश भट्ट का नाम विशेष सम्मान के साथ लिया जाता है। जिनका उल्लेख चित्तौड़ किले पर महाराणा कुम्भा द्वारा निर्मित कीर्ति स्तम्भ (वर्तमान में विजय स्तम्भ) की प्रशस्ति तथा एकलिंगजी के दक्षिण द्वार की प्रशस्ति में किया गया है। इनकी विद्वत्ता की प्रशंसा सुनकर आसपास के राज्यों में भी इन्हें अपने यहां सम्मानपूर्वक बुलाकर इन्हें जागीरें एवं अन्य सम्मान प्रदान किया। इस प्रकार मध्यप्रदेश और मेवाड़ के हिन्दू राज्यों में इनका प्रभाव फैला।

मेवाड़ में कुल 11 गांव इन्हें जागीर में मिले जो भारत आजाद होने के बाद भी सन् 1958ई. तक इनके वंशजों के अधीन रहे जिससे ये अपना निर्वाह करते रहे। 1 जुलाई 1958ई. को जागीर पुर्नग्रहण एक्ट के अधीन इन्हें जब्त कर लिया गया तथा मुआवजे की राशि इन्हें दे दी गई। इन जागीरों का पुर्नग्रहण दिनांक 23-8-54 से ही माना गया। दशोरा जाति के जिन विद्वानों ने विशेष ख्याति प्राप्त की उनका विवरण निम्नानुसार हैः-

बसन्तराय-सोमनाथ एवं नरहरि- रावल रतनसिंह की मृत्यु के बाद हमीर एवं क्षेत्रसिंह गद्दी पर बैठे जिनका शासनकाल 79 वर्ष तक रहा। इसके बाद विक्रम संवत् 1439 (सन् 1382ई.) में महाराणा लाखा गद्दी पर बैठे जिनका शासन काल विक्रम संवत् 1478 (सन् 1421ई.) तक रहा। इन्हीं के शासन काल में दशपुर (दशोरा) जाति के 'झोटिंग भट्ट' नामक प्रसिद्ध विद्वान हुए थे जिन्हें 'झोटिंग केशव' भी कहते थे। ये भृगु वंश (भार्गव गोत्र) के सार्वण भट्ट परिवार में उत्पन्न हुए थे। ये बसन्तराय-सोमनाथ के पौत्र एवं नरहरि के पुत्र थे। बसन्तराय-सोमनाथ बड़े विद्वान थे तथा नरहरि न्यायनिपुण होने के अतिरिक्त वेद विद्या में भी निपुण थे इसलिए इन्हें पृथ्वी का 'ब्रह्मा' कहा जाता था। बसन्तराय-सोमनाथ के पिता संभवतः रावल रतनसिंह के समय में विक्रम संवत् 1358 में मेवाड़ में आये हों। (क्रमशः)

प्रस्तुति-शीला जगदीश दशोरा

क्या हांसिल करोंगे तुम

टीचर ने बच्चे से पूछा- बताओ, बड़े होकर क्या करोगे?

बच्चा- शादी करुंगा।

टीचर- वो नहीं, मैं पूछ रहा हूं बड़े होकर क्या बनोगे?

बच्चा- दूल्हा।

टीचर (झल्लाकर)- मेरा मतलब है, बड़े होकर क्या हासिल करोगे?

बच्चा- दुल्हन।